रहस्य आखरी इच्छा का.....

हिन्दू परम्परागत् मरनेवाले की आखरी इच्छा पूरी की जाती है। फाँसी की सजा प्राप्त मुजरिम को भी फांसी देने से पहले उसकी आखरी इच्छा पूरी करने का प्रावधान भारतीय कानून में है। भागवत् गीता में इस इच्छा को बहुत महत्व दिया गया है। इसके अनुसार मृत्युशय्या पर लेटा मनुष्य अंतिमसमय में जैसा भाव करते हुए देहत्याग करेगा, उसी भाव के अनुरूप उसे पुनर्जन्म प्राप्त होता है। नामस्मरण की महत्ता इसी कारण है कि आखरी समय में यदी जुबान पर ईश्वर का नाम आ जाये तो उसे मोक्ष मिल जाती है। यानी उसका पुनर्जन्म नहीं होता। अब आखरी समय में अपनेआप ईश्वर का नाम मुंह से निकल जाये तो समझो उस आदमी की लॉटरी निकल गई। किंतु ऐसा होता नहीं है। ईश्वर का नाम जपने की यदि शुरू से आदत रही तो आखरी समय में कोशिश नहीं करनी पड़ेगी।

जीवनदर्शन को इस पहलू पर विचार करने पर मेरे मन में जो पहला प्रश्न उठा वह यह था कि जो व्यक्ती बीमार है या कोमा में चला गया है या जिसकी अचानक हार्ट अटैक या एक्सिडेंट से मृत्यू होती है तो ऐसे लोगों के आखरी भाव क्या होते होंगे? रोगी तो केवल अपने शारीरिक दुःख को याद करेगा। कोमावाला चेतनाशून्य होने पर अपनी विचारक्षमता खो देता है। और अचानक मरनेवाला तो ऐसी कल्पना भी नहीं करता। इन स्थितियों में मानव के अंतिम भाव कैसे पकड् में आयेंगे? हकीकत में मृत्यू को समीप देखकर विचारों तथा भावों की गति इतनी तेजी से घूमती है कि अंतिम भाव को पकड़ना नामुमकिन हो जाता है। भावों और विचारों के कोलाहल की सुई जहाँ रूकती है वही आखरी भाव होता है जो सिर्फ कुदरत की पकड़ में आ सकता है। भागवत् गीता में इस भाव को इतना महत्त्वपूर्ण इसलिए माना गया है की मोक्षप्राप्ति के फेरे में पड़कर मनुष्य दुःख भोगता रहता है। नामस्मरण की महिमा इसी वजह से है की मृत्यू के निकट सिवाय रामनाम के मनुष्य के मन में कोई इच्छा बाकी ना रहे और उसे मोक्ष प्राप्त हो सके. भारतीय कानून में गीता की सौंगध खाने और मुजरिम से उसकी आखरी इच्छा पूछने का कारण भी यही है।